मारतीय धर्म साधना मे समाज चेता के रूप में भक्ति काल में संत काय्य धारा के सभी कवि भक्ति मध्यकालीन संतों के योगदान को भुलाया नहीं जा. के पथ को मुक्ति का मार्ग मानकर चलते हैं। बिना ईश्वर सक्षता। इन्होंने अपनी समन्वयी विचारधारा से व्यक्ति की भक्ति किए मनुष्य इस जगत के मोह में बंधा होता सधना के साथ-साथ समाज साधना को भी गहराई से . है । इस मोह से निकल कर ही भक्ति के माध्यम से प्रभावित किया है। धर्म सुधार की इसी प्रबल भावना ने ही समाज की सेवा की जा सकती है। भक्ति का स्यरूप और उनके जीपन में आत्म चेतना का संचार किया। उन प्रयोजन निष्काम होना ही भक्ति का सिद्धान्त है। जीवन प्रदुख लक्ष्य आध्यात्मिकता के साथ-साथ समाज के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा में में व्याप्त बुराई, रूढ़ विकृतियों को विनष्ट कर नई चेतना कर्म-मार्ग, योग-मार्ग, ज्ञान-मार्ग और भक्ति-मार्ग का और नए स्वरूप को प्रदान करना था। गुरु नानक भी ऐसे प्रमुख माना गया है। अब यह विश्लेषण करना आवश्यक समाज सुधारक के रूप में आते हैं जिन्होंने अपने जीवन है कि नानक जी ने इनमें से किसे चुना। वे निर्गुण को समाज के मूल में व्याप्त बुराइयों को खत्म करना था |. निराकार परमात्मा के उपासक रहे है। नानक जी ने कर्म गुरु नानक के कृतित्व की विशेषता उनके विधार और को महत्व दिया है। मानव सृष्टि में कर्म सब मार्गों का व्यवहार में निहित है। उन्होंने अपने आचरण के माध्यम मूल है। इसकी व्याप्ति शारीरिक, मानसिक और से कर्मशीलता की जो प्राण प्रतिष्ठा की और सामान्य आध्यात्मिक रूपों में मानी जाती है। यही मन को जड़ से जनजीवन को गतिशील बनाने का जो प्रण किया वह थेतन की ओर लेकर जाता है जहाँ उसी एक अविनाशी वास्तव में अनुपमेय है। इसका कारण यह है कि गुरु कं दर्शन होते हैं। नानक जी का मानना है कि कर्म का नानक ने अपने परिवेश और परिस्थितियों का आकलन उदगम भी उसी सता से ही संभव है और उसी त्रिगुण किया। इसलिए एक ओर उनके काव्य में जहाँ वैराग्य दशावतार और देक-दानव की सृष्टि संभव है- ओर समाज विकास, लोक संग्रह एवं लोक मंगल की मनुष्य गलती का पुतला होता है और यह जगत भावना का भी प्राधान्य था। गुरु नानक द्वारा निर्दिष्ट. रूपी माया के कारण होता है, इसलिए वह संसार के भक्ति पथ को ही 'नानक पथ' या 'सिख धर्म' कहा जाता आवागमन से मुक्त नहीं हो पाता है। यह सांसारिक भाव है। गुरु नानक देव का जन्म 1469 में लाहौर से तीस ही मोह माया से मुक्त नहीं होने देता। विवेक के अभाव में मील दूर दक्षिण पश्चिम में तलवण्डी नामक स्थान पर सही गलत, पाप - पुण्य और शुभ - के भ का मनुष्य हुआ जो अब पाकिस्तान में है। बाद में गुरु नाकक के को आभास नहीं हो पाता है। अच्छे कर्मों से ही हमारे सम्मान में इस जगह का नाम ननकाना साहिब रखा. मन में सुविचार पैदा होंगे जिससे कर्मयोगी बनने का पथ गया। प्रशस्त होता है। नानक जी कर्म के महत्व देते हुए कहते इन्होंने धर्म से विमुख सामान्य मनुष्य में अध्यत्म हैं कि - चेतना जागृत कर उसे ईश्वरीय मार्ग से जोड़ा। समाज में वर्ग या पुरूष स्त्री को लेकर कोई भेदभाव नहीं किया। उन्होंने सदैव स्त्री को ऊँचा स्थान दिया। नानक ने उन लोगों की निंदा की जो नारी को आगे वे इस बारे में और बताते हैं - मूर्ति है जो मनुष्य को जन्म देकर उसे पालती पोषती है-

इसका श्रेय उसी से संभव है या नहीं। कर्म को लेकर नानक जौ की अक्धारणा उत्तम और श्रेष्ठ माना गया है। गुरु संयोग के नानक इस प्रेम की एकदम, स्पष्ट है कि उन्हें क्यत स्वीकार नहीं। मानव अभिव्यक्ति के लिए उपमानों के रूप का चेतना का हास जिस भाव या कर्म से उत्पन्न होता है वह प्रयोग करते हैं। जैसे- ब्रमर-कमल, फतंग- दीपक, भाध्य तक पहुँचने का सही साधन नहीं माना जा सकता. शिशु-माता आदि। नेक जी की प्रेमामिव्यक्ति में डुलता है जिसमें ईश्वर मिलन की तड़फ है। जीव नानक जी बंधन कर्म को और स्पष्ट करते हैं... ईश्वर-प्रेम पाने के लिए अनेक उपादानों का प्रयोग करता जैसा कबीर ने दुल्हिन गावहुं मंगलाधार के रूप में

परन्तु नानक जी का प्रेम अलग स्वरूप में है का के ने ऐसे समाज की कल्पना की जो वहाँ प्रेम में रहस्य नहीं है. बल्कि यह विशुद्ध लौकिक बनता और कर्म के सिद्धान्त पर टिका हो। अपने धरातल पर है -भानक मिलह कपट दर खोलहु एक लीन राजाओं के अन्याय और अत्याचारों की घोर घड़ी खट मास' अर्थात मिलन विछोह में अब एक घड़ी निंदा की। नानकवाणी में बाबर के अत्याचारों का जो भी छह मास के समान हो गई है। मिलन का आग्रह विरोध मिलता है वह पूरे संत काव्य में मानकता की एक अर्थात साधना इतनी दुष्कर है कि यह इसे कोई कि मिसाल है - वैद्य इसका उपचार नहीं कर सकता बल्कि इसके लिए 'डैरासन खसमाना कीओआ हिंदुस्तानु डराइआ। मन को कैसे साधा जाये यह आवश्यक है-. दिषय में दृष्टिगत है। यह जीवन की चेतना और गानक जी का रचना संसार लोक-संस्कृति का गतिशीलता के साथ जुड़ा है। ज्ञान का मार्ग सिद्धि तत्व करता है इस कारण से बस, पीड़ा हर संत ७. और मनुष्य के शरीर और मन का संयोजन है| यथार्थ रूप में अभिव्यक्त हुआ है। आसाराग के माध्यम संत काव्य धारा में इसका प्रयोग सबसे अधिक सिद्ध और दि. आ भामाजिक संवेदना को नए स्तर ए० पहुँचाया है। लौकिय नै किया। उस समय ज्ञान हा साधनाविदेशी आक्रमणकारी विशेषकर बाबर का अत्याचार इसी लौकिक नहीं थी इसे गुह्य साधना के रूप में देखा जाता की नानक जी प्रस्तुत करते है तो है भक्तिकाल जग, रहेस्यवाद यहीं से उत्पन्न होता है। यह की अद्वितीय निधि बन जाता है। नानक जी ने समाज को को. 5. * से दूर होता था। गुरु नानक ने इस ज्ञान ततुओं का रूप माना है और यह ईश्वर प्रदत है इसे नष्ट को 'भूमा' कहा है। नानक जी का यह ज्ञान गीता के करने का अधिकार ननुष्य को नहीं है और यदि ऐसा होता जान दर्शन से प्रभावित है. स्वयं वे गीता के जानकार और है तो इसका विरोध समाज में जरूरी है। लम्दी साथना के संस्कत भाषा के जानने वाले थे अत: वे इसे लोक के बाद ऐसा जीवन दर्शन डे और न करने में सक्षम हो समीप लाने का भ्रयास करते हैं। नानक जी धैर्य और की प्रतिब्रम्ब रहे हैं प्रकाश स्थरूप चेतना है जो यूरु से प्राप्त किया जा यही कारण है कि असामाजिक घटित दृश्य उनके मन सकता है। यह अद्वैत-दर्शन से प्रमावित नहीं है यह मस्तिष्क हे बने रहते पीर्थों की यात्राएँ की और सभी धर्मों के लोगों को अपना संत काव्य धारा में योग साधना को बहुत महत्व दिया शिष्य बनाया। उन्होंने हिन्दू धर्म और असलमान धर्म दोनों गया है। ईश्वर सबके लिए असाध्य थे | असाध्य क्रो साध्य धर्मों के विधारों को सम्मिलित कर एक नये तानवता के बनाने के लिए जिन साधनों की आवश्यकता थी उनमें धर्म को तरजीह दी जिसका मूल आधार- न कोई हिन्दु योग और ज्ञान को ही श्रेष्ठ माना गया था। जीव को न कोई मुसलमान था। | कुण्डलिनी योग के द्वारा ही ; होकर ब्रहम रूपी समाज सुधार नानक जी की सृजनशीलता का भुख्य नह नाद को स्फोट करती धी। योग साधना की अपनी आर रहा है और ऐसा तमी संभव है जब प्राणियों के गन्यतार्द हैं और संत समाज की परिकल्पना का यह बीच प्रेम और सौहार्ट बना रहेगा। प्रेम उनके दाशंनिक आवश्यक आधार था | एशम हार, कमल नाल, अग्ृत धार, दृष्टिकोण का बुनियादी आधार है। मानव प्रेम लौकिक भाव नव, शून्य, समाधि, दीपक, सहज साधना आदि के सेंसार से अलौकिक ससार की ओर क्ा पथ है। नानक अध्यम से नानक जी योग को साधारण बनाने की जी के अलवा अन्य का कवियों ने ईश्वर और जीव के कोशिश करते हैं ताकि गह आम लोगों का विक य बन संबधों को व्याख्यायित करने के लिए रागात्यक संबंधों की सके । भक्ति के रूप में यह मानव मन को एक अनूठा परिकल्पना की है। संत कवियों की घारणा थी कि जीव आनद देता है _

नाथ पंथ ने हठ योग को बहुत महत्व दिया और है - उनकी संगत में वही रह सकता था जो इस योग साधना को साधने में सक्षम होता था। भारत में आज भी इसे फेरि कि प्रथलित और लोकप्रिय साधना के तौर पर देखा

जा सचा (ु अराधिवा जन ले भन् ना जाहि। सकता है। परन्तु, नानक हठ योग के प्रति उदार दिखाई ननक सार है, गुरमुख घड़िया राहि।। नहीं देते हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गुरू नानक नानक जी जाति पाति का भी विरोध अपने की व्यक्तित्व असाधारण और बहुआयामी था। वे एक साथ रचनात्मक काव्य में करते हैं। उनका मानना है कि समाज लौकिक समाज में कवि, समाज सुधारक, संगीत, के समस्त प्राणी एक ही पिता की सन् ्तान हैं एक पिता... दार्शनिक और देशभक्त थे। उनका जीवन-दर्शन व्यापक, एकस के हम वारिक' तो जाति पाति का सवाल ही नहीं. विस्तृत और प्रभावकारी था। उनकी विचार शक्ति और उठता। जब तक मनुष्य अपने मन के अहं का त्याग नहीं क्रिया-शक्ति में अनोखा सामंजस्य मौजूद था। प्रकृति प्रेमी कर देता वह आपसी मैत्री और प्रेम भाव से नहीं रह. के रूप में नानक जी ने तखारी' राग में बारहमासा का सकता। सामाजिक असमानता और विभेदीकरण जातिगत चित्रण किया है। संस्कृत, फारसी, पंजाबी और उस समय भाव से ही मनुष्य के मन में पैदा होता है। यह सामाजिक की सबसे प्रचलित ब्रज भाषा का ज्ञान होने कारण नानक संकीर्णता समाज के विकास में बाधक होती है। जी को लोक संस्कृति की गष्ठन जानकारी थी जो उन्हे कबीर आदि संतों की तरह गुरु नानक ने भी मनुष्य... समाज के नजदीक लाती है। इस अनमोल जीवन को व्यर्थ के कार्यों में गंवाने की